International Journal of Applied Research 2019; 5(10): 351-352

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(10): 351-352
www.allresearchjournal.com
Received: 23-08-2019
Accepted: 30-09-2019

डॉ. मेधा कुमारी
शिक्षिका (गृह-विज्ञान), शिव गंगा बालिका, उ० वि०, मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मेधा कुमारी
शिक्षिका (गृह-विज्ञान), शिव गंगा बालिका, उ० वि०, मधुबनी, बिहार, भारत

भारत में कार्यकारी नारियों की स्थिति

डॉ. मेधा कुमारी

सारांश:
आज बदलते युग में मजदूर महिलाएँ सड़कों पर मुट्ठी बांधकर आक्रोश के साथ मंचों पर अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठाने में सक्षम हैं| एक परिस्थिति धारण के कारण व्यक्ति जो कार्य करता है, वह उस पद की भूमिका होती है| कामकाजी महिलाओं की विविध भूमिका का निर्वाह उन्हें कम या अधिक भूमिका संघर्ष की स्थिति में ला देता है| जैसे उनके पारिवारिक व वैवाहिक जीवन संतान सम्बन्धी एवं स्वास्थय सम्बन्धी दायित्व, निजी नौकरी एवं कामकाज के क्षेत्र में प्रभावित होते हैं| महिलाएं कामकाजी हो तो उनका लाभ उन्हें स्वयं को तो प्राप्त होता है साथ ही पुरुषों की चिंताएं भी कम हो जाती है और पारिवारिक आय पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है| बच्चों को अच्छी व उच्च शिक्षा के साधन प्राप्त होते हैं तथा महिलाओं की वृद्धावस्था की परेशानियाँ भी दूर हो जाती हैं| सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए महिलाओं को अपने समय का उचित प्रबंध भी करना होता है| जिसके बिना वे अपने किसी कार्य को सरलता पूर्वक नहीं कर सकती हैं| कामकाजी होने के कारण उन्हें प्रत्येक कार्य पर विचार करना पड़ता है की कौनसा कार्य कैसे, कब और क्या करें| महिलाएं एक ही समय में कई प्रकार के कार्यों का अपने समय के साथ प्रबंधन कर लेती हैं| पारिवारिक, सामाजिक एवं कामकाजी जीवन में विभिन्न चुनौतियों व तनावों का सामना करते हुए कामकाजी महिलाएं अपने कार्यों पर ध्यान केन्द्रित कर सभी कार्य करने के लिए उचित समय प्रबंधन द्वारा वे अपने परिवार की और संस्थान की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती हैं| जब अपनी विविध भूमिका में वे असमायोजन एवं अंतर्द्वंद महसूस करती हैं, तो कामकाजी महिलाओं को संघर्ष की स्थिति से गुज़रना पड़ता है|

कुट-शब्द: कामकाजी महिलायें, पारिवारिक आय,असमायोजन, वृद्धावस्था, चुनौतियां व तनाव, उच्च शिक्षा, निजी नौकरी, स्वास्थय सम्बन्धी दायित्व

प्रस्तावना:
आज की सामाजिक घटनाओं में प्रमुख तथ्य नारी की भूमिका में परिवर्तन होना है| आज नारी शिक्षित हो रही है| शिक्षित नारी परिवार के विकास के लिए परिवार की आय में वृद्धि करने के लिए योगदान कर रही है| विवाह केवल दो आत्माओं का आध्यात्मिक बंधन नहीं है| उसे जीवन के यथार्थ को वहन करने के लिए वस्त्र, भोजन, आवास, भौतिक सुविधाएँ सभी की आवश्यकता है| बच्चों की शिक्षा-दीक्षा पर होने वाले व्यय से परिवार की आय में कमी आ रही है| पति की सीमित आय आज के सामाजिक परिवेश में जीवन की सुविधा जुटाने में असमर्थ हैं| शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक दबाव के कारण नारी को कामकाजी होना पड़ रहा है| आज पुरानी पीढ़ी के लोग भी यह इच्छा रखते हैं कि उनकी पुत्रवधू भी परिवार की आय में वृद्धि करें तथा वह सभ्य संस्कारित व शिक्षित हों| शिक्षा के प्रसार और आर्थिक दबाव के कारण महिला रोजगार की तरफ बढ़ी हैं| आज उनकी संख्या इतनी हों गई है कि सेवारत महिलाओं का स्वयं एक वर्ग बन गया है| [1]

भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है| इसमें युगानुरूप परिवर्तन होतें रहें हैं| उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं तथा उनकें अधिकारों में तदनरूप बदलाव भी होते रहे हैं| वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ थी, परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था [2]

अध्ययन का उद्देश्य:
समाज शास्त्र में प्रायः महिलाओं की शिक्षा सशक्तिकरण, स्वतंत्रता तथा अधिकार एवं विगत वर्षों में शोध कार्य संपन्न किये जा चुके है और वर्त्तमान में भी जारी हैं,

लेकिन भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति एवं सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित शोध कार्य कम ही हैं| [3]

अतएव प्रस्तुत शोध समाज में महिलाओं की स्थिति पर आधारित है| महिलाओं में अपने अधिकार के प्रति तथा शिक्षा के प्रति जागरूक करने से सम्बंधित व्यवहार का एक सामाजिक चित्रण है|

अतः यह अध्ययन इस दिशा में एक छोटा सा प्रयाश है जिसमें हम समाज में व्याप्त असमानता, असामाजिकता एवं महिलाओं को समाज के सामने प्रस्तुत कर सकें| [4]

शोध प्राकल्पना:

किसी अनुसंधान कार्य में पूर्ण वैज्ञानिक विश्वश्नीयात्मक और गहन अध्ययन करने के लिए विषय एवं अध्ययन क्षेत्र का सीमांकन करना आवश्यक होता है| अन्यथा कई प्रकार की त्रुटियों की संभावनाएं हो जाती हैं| अतः प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में समय, आर्थिक स्थिति एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने जिन सीमाओं का निर्धारण किया है वे निम्नलिखित हैं-

1. प्रस्तुत अनुसंधान कार्य ग्वालियर जिले के अंतर्गत चार विकास खंड की असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के अध्ययन पर आधारित होगा|
2. प्रस्तुत अध्ययन में ग्वालियर जिले के असंगठित छेत्र में कार्यरत महिलाओं का अध्ययन प्राथमिक तथा द्वितीय स्त्रोतों पर आधारित तथ्यों के आधार पर किया जाएगा|
3. प्रस्तुत अध्ययन ‘‘असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की दोहरी भूमिका एवं पारिवारिक समायोजन (ग्वालियर जिले के विशेष सन्दर्भ में) किया गया है|

ग्वालियर जिला एक राजस्व संभाग में आता है राज्य के उत्तरी भाग में 25º34′ ऊ॰ और 26º21′ उत्तरी अक्षांश तथा 77º40′ पूर्वी देशांतर और 78º54′ पूर्वी दिशा के बीच स्थिति स्थित हैं| यह 5214 वर्गमील क्षेत्र में फैला हुआ है जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 77% से कुछ अधिक हैं| इस जिला में चार विकास खंड शामिल हैं| राजनैतिक दृष्टि से 660 ग्राम है| चार जनपद पंचायत तथा 62 वीरान हैं| एक जिला पंचायत तथा विधान सभा क्षेत्र में विभाजित हैं| [5]

विश्लेषण और व्याख्या:

पारिवारिक संबंधों में पति-पत्नी के साथ-साथ बच्चों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है| परिवार में बच्चों और माता-पिता के बीच सम्बन्ध को मुख्यतः 3 महत्त्वपूर्ण रूप में देखा जाता है| जिनमें प्रथम प्रकार है स्वीकारोक्ति, इसमें माता-पिता अपने बच्चों की अधिकतम बातों को स्वीकार कर लेते हैं| बच्चा जो कुछ भी कहता है माता-पिता उसकी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं| ऐसे अभिभावक बच्चों की हर प्रकार के समस्याओं को दूर करने का भरसक प्रयास करतें हैं| [6]

घरेलु महिला की तुलना में उच्चतर सामाजिक आर्थित स्थिति ही वर्त्तमान कामकाजी महिला को मनोवैज्ञानिक रूप से उसकी व्यक्तिगत समस्याओं को नज़रअंदाज करने की क्षमता प्रदान करती है| मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण भावनाओं के विकास से सम्बंधित होता है| इससे महिला घरेलु सन्दर्भों में उचित निर्णय लेने में सक्षम होती हैं, तथा उसके सामाजिक स्तर में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी होती जाती है|

यद्पि महिला चाहे घरेलु हो या कामकाजी उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है, परन्तु घरेलू महिला का कार्य को कोई मूल्य निर्धारित न होने के कारण कामकाजी महिलाओं को अधिक महत्त्व दिया जाता है, परन्तु वर्त्तमान कामकाजी महिलाओं में सशक्तता के साथ पनप रही ‘लिव इन रिलेशनशिप’ की प्रवृति, अधिक उम्र में विवाह तथा विवाह के पश्चात बच्चे की जिम्मेदारी से भय जैसे प्रश्न परिवार नामक संस्था के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाने वाले हैं|

सुझाव:

कोई भी शोध अपने आप में सम्पूर्णता लिए नहीं हो सकता है| प्रस्तुत शोधकार्य कामकाजी महिलाओं की कार्यक्षमता जानने का लघु प्रयास है भावी शोधकर्ता इस संबंध में अध्ययन के लिए निम्न तथ्यों पर गौर करा सकतें हैं|

1. यह अध्ययन केवल कार्यक्षमता का मापन करने के लिए किया गया है|
2. इस अध्ययन के लिए केवल तीन आयाम ही लिए गए हैं| जबकि अन्य आयाम जैसे स्वास्थ्य आदि को भी लिया जा सकता है|
3. प्रस्तुत शोध कार्य में 100 न्यादर्श लिया गया है कि भावी शोध के लिए न्यायदर्श को बढाया भी जा सकता है|
4. प्रस्तुत शोध कार्य शहर के अतिरिक्त अन्य शहरों की कामकाजी महिलाओं पर भी किया जा सकता है|

निष्कर्ष:

अतः शोध अध्ययन की प्रासंगिकता से सम्बंधित तैयार प्रश्नावली के आधार पर लिये गये साक्षात्कार से स्पष्ट हुआ कि सबसे अधिक सोचनीय स्थिति असंगठित क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं में पाई गई है| अधिकांश कामकाजी महिलाएं अस्थायी रूप से कार्य में संलग्न ज्ञात हुई है जिससे नियोक्ता को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है| निजी संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव, शासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला कर्मचारी में व्यावसायिक तनाव की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक होता है|

सन्दर्भ-सूचि:

1. नंदा, बी॰आर॰ (1976)-इण्डिय वीमेन, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा॰लि॰ (दिल्ली)
2. डॉ॰ जीबनलाल (प्रोफेसर) ‘‘मनोविज्ञान’’, Govt. College Gurur, Durg (Chhattisgarh)
3. ‘द वोर्किंग वीमेन’ द पोजीशन ऑफ़ वीमेन इन इंडिया, बम्बई 1973, पृ॰-18-19
4. रेनू पवार, शोध मंथन, सितम्बर-2017, पे॰ सं॰ 150-156
5. डॉ॰ छाया हार्डिया, डॉ॰ जयश्री बाथम, गृह-विज्ञान विभाग (श्री रेवा गुर्ज़र बाल निकेतन महाविद्यालय), आई॰ जे॰ एच॰ एस॰ 2017, Vol no. (2) 97-99
6. डॉ॰ मनोज वानखेड़े, सहायक प्राध्यापक, शासकीय कन्या महाविद्यालय (बड़वानी, म॰प्र॰) International Journal of Comprehensive Research and Review 2018, 1.